PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ४

पैसे का समझदारी से इस्तेमाल

Author: Mala Kumar
Illustrator: Deepa Balsavar
Translator: Madhubala Joshi

अमीर बनने का सपना।

चलिए दूधवाले की इस कहानी से शुरू करें। एक दिन दूध बेचते हुए रास्ते में उसने सपना देखना शुरू किया।

मैं यह दूध का घड़ा बेच दूँगा तो इससे मुझे जो पैसे मिलेंगे,

उनसे मैं कुछ मुर्गियाँ ख़रीदूँगा। वे अण्डे देंगी।

मैं अण्डे बेचकर एक बकरी ख़रीदूँगा और उसका दूध बेचूँगा

और ढेर सारे पैसे कमाकर एक गाय खरीदूँगा।

जल्द ही मेरे पास ढेर सारा पैसा होगा!!! तुम्हारे विचार से इसके बाद क्या हुआ होगा?

एक पुरानी कहावत है - 'मूर्ख और उसका पैसा जल्द ही बिछड़ जाते हैं।' पैसे कमा लेने के बाद हमें उनका सही इस्तेमाल भी करना चाहिए। हम पैसे बैंक में जमा कर सकते हैं या व्यापार करके और ज़्यादा पैसे कमाने में लगा सकते हैं या फिर नियमित आमदनी के लिए कम्पनियों में निवेश कर सकते हैं। हमें अपने साधनों की सीमा में जीना और फिर भी अपने सपने पूरे कर लेना आना चाहिए। समझदार लोग जानते हैं कि देश के नियम तोड़े बिना पैसे कैसे कमाएँ। तुम भी पैसे को समझदारी से इस्तेमाल करना सीख सकते हो।

“धरती हर आदमी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त देती है, लेकिन हर आदमी के लोभ के लिए नहीं।”
-महात्मा गाँधी

क्या मुझे सचमुच एक और बैट की ज़रूरत है?

अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करने के लिए लोग काम करते हैं और पैसा कमाते हैं। **आवश्यकता** और **इच्छा** में क्या अन्तर है? अगर तुम्हारे शहर में अच्छी बस सुविधा नहीं है तो तुम्हें स्कूल आने-जाने के लिये साइकिल की आवश्यकता है। क्रिकेट के नए बैट का तुम्हारा सपना एक इच्छा है, आवश्यकता नहीं। ज़िन्दा रहने के लिए हमें भोजन की ज़रूरत होती है। हमें ऐसे भोजन की इच्छा होती है जो स्वास्थ्य के लिए बढ़िया तो हो ही, स्वादिष्ट, शानदार, रसीला, गर्म हो और अच्छे रेस्टोरेंट में भी परोसा गया हो।

परिवार अपने हर सदस्य की ज़रूरतों के मुताबिक पैसे ख़र्च करते हैं। खाने योग्य भोजन, पढ़ाई, रहने के लिए जगह, सुरक्षा और भविष्य के लिये बचत; ये सब आवश्यकताएँ हैं। परिवार इच्छाओं पर पैसा ख़र्च करने के बारे में तब सोचते हैं जब आवश्यकताओं पर ख़र्च करने के बाद भी पर्याप्त पैसे बच जाते हैं। अपनी माँ से पूछो कि क्या इसीलिए तुम्हारे किसी चीज़ को चाहने पर भी उन्होंने तुम्हें वह ख़रीदने नहीं दी? उनसे पूछो कि उन्होंने वह चीज़ ख़रीदने के बजाय उस पैसे का क्या किया।

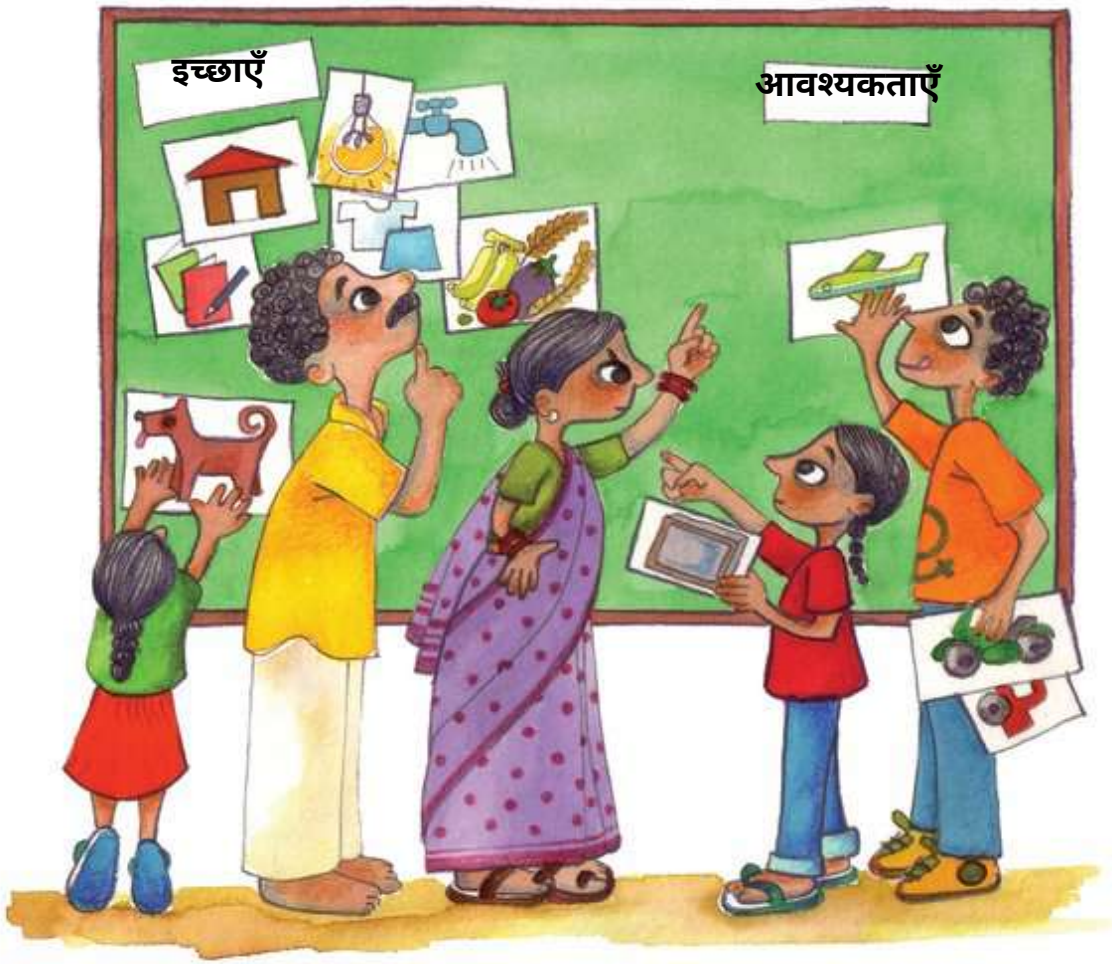

काम का मूल्य:

काम = पैसे?

सभी कामों के बदले पैसे नहीं चुकाए जाते। बहुत से काम ऐसे हैं जिनके लिए काम करनेवालों को पैसे नहीं दिए जाते। क्या तुम इस तरह की स्थितियों के उदाहरण सोच सकते हो?

मैं खाना पकाती हूँ, सफ़ाई करती हूँ, पढ़ाती हूँ, पैसे का प्रबन्धन करती हूँ और इन सबके लिए मुझे प्यार मिलता है।

लेकिन अगर हमें इन सब कामों के लिए पैसे देने पड़ें तो बहुत पैसे देने पड़ेंगे!

इस जानवर को बचा पाना अपने आप में कितना बढ़िया इनाम है।

धूप की क्या क़ीमत हो सकती है? यह बेशक़ीमती है लेकिन हमें मुफ़्त में मिलती है।

ख़र्चों का हिसाब रखना

ज़्यादातर लोग अपने या दूसरों के लिए काम कर के पैसे कमाते हैं। किसी परिवार में एक या एक से ज़्यादा, पैसे कमानेवाले सदस्य हो सकते हैं। परिवार अपनी आमदनी, ज़रूरतों और ज़रूरी ख़र्चों का ध्यान रखते हुए पैसे ख़र्च करता और बचाता है। बजट पैसे ख़र्च करने और बचाने की एक योजना है।

ज़्यादातर परिवारों में ऐसे दृश्य देखने को मिल सकते हैं:

आमदनी = ख़र्च

बचत या दूसरों को उधार देने के लिए कुछ भी पैसा नहीं बचा कोई अप्रत्याशित ख़र्च इस परिवार के लिए मुश्किल पैदा कर देगा। क्यों?

लगता है हमें इस महीने कुछ पैसे उधार लेने पड़ेंगे।

आमदनी ख़र्चों से कम है।

यह किसी भी परिवार के लिए अच्छी स्थिति नहीं हैं। इसका मतलब परिवार को ख़र्चे चलाने के लिये उधार लेना पड़ेगा। उधार को एक तय समय के अन्दर ब्याज के साथ चुकाना होगा। आमदनी और ख़र्चों को बराबर रखने के लिए परिवार को ख़र्चे कम करने होंगे। और अगर उन्हें कर्ज़ न मिला तो उन्हें पैसों के लिए कोई सम्पत्ति जैसे कि स्कूटर या टीवी बेचना पड़ेगा।

अपनी बचत से हम अगले साल छुट्टियों में घूमने जा सकते हैं।

आमदनी ख़र्चों से ज्यादा है।

सारे आवश्यक कामों पर ख़र्च करने के बाद जो पैसे बचते हैं, उनका इस्तेमाल कई तरह से बचत करने में किया जा सकता है या उन योजनाओं में निवेश किया जा सकता है जिनसे धन बढ़ेगा। हम सभी इस स्थिति में पहुँचने का प्रयत्न करते हैं। जितनी बेहतर आमदनी होगी उतने ही ज़्यादा पैसे हम ज़रूरतों पर ख़र्च कर सकते हैं और भविष्य के लिए बचा सकते हैं।

परोपकार मानवजाति के प्रति उदार रहने का आचरण है। सम्पन्न परोपकारी स्कूल, अस्पताल, स्टेडियम आदि बनवाने में मदद करते हैं या लोगों की भलाई के लिए धन की व्यवस्था करते हैं।

परिवार का बजट

ख़र्च दो तरह के होते हैं- अल्पावधि और दीर्घावधि। परिवार को रोज़मर्रा के ख़र्चों और मासिक ख़र्चों के लिये पैसे रखने होते हैं। वार्षिक ख़र्चों के लिए भी पैसे रखने चाहिएँ। परिवार का बजट तुम्हारे परिवार के पैसों के लिये एक योजना है।

अपना घर बनाना, या ज़मीन खरीदना, या अपनी स्वयं की कम्पनी स्थापित करना जैसे दीर्घावधि लक्ष्यों के लिए पर्याप्त पैसे बचा लेने के लिए अल्पावधि ख़र्चों को कम करना एक तरीक़ा है। विद्यार्थी काग़ज़ों को कम बर्बाद करके; पेन, क़िताबें, पानी की बोतलें और चश्मों जैसी अपनी चीज़ों को सम्भाल कर अपने परिवार के अल्पावधि ख़र्चों को कम करने में मदद कर सकते हैं।

बजट परिवार की कमाई को बेहतर इस्तेमाल करने में मदद के लिए एक मार्गदर्शिका की तरह बनाया जाता है। लेकिन कभी-कभार जब अप्रत्याशित चीज़ें घटित होती हैं जैसे कि जब अचानक क़ीमतें बढ़ती हैं या आमदनी कम हो जाती है तो कुछ तरीक़े अपनाकर लोग फिर भी अपने बजट की सीमा में रह सकते हैं। यह हैं- ख़रीदने के बजाय किराये पर लेना, या किश्तों पर ख़रीदना, एडवान्स पेमेण्ट यानी अग्रिम राशि लेना और सरकार के अनुदान स्वीकार करना।

किश्तों में भुगतान करना आसान है

बैंक और दूसरी वित्तीय संस्थाएँ (यह क्या है? देखें पुस्तक 3 - पैसे के प्रबन्धक) लोगों को उधार दे कर उनके दीर्घावधि सपनों को पूरा करने में मदद करती हैं। वे लोगों को चीज़ ख़रीदने के बाद भुगतान करने का मौका देती हैं। उदाहरण के लिए लोग पहले बहुत ही कम रक़म दे कर कम्प्यूटर ख़रीद सकते हैं और बाकी बचा दाम बराबर हिस्सों में, जिन्हें **किश्तें** कहते हैं, चुकाया जा सकता है।

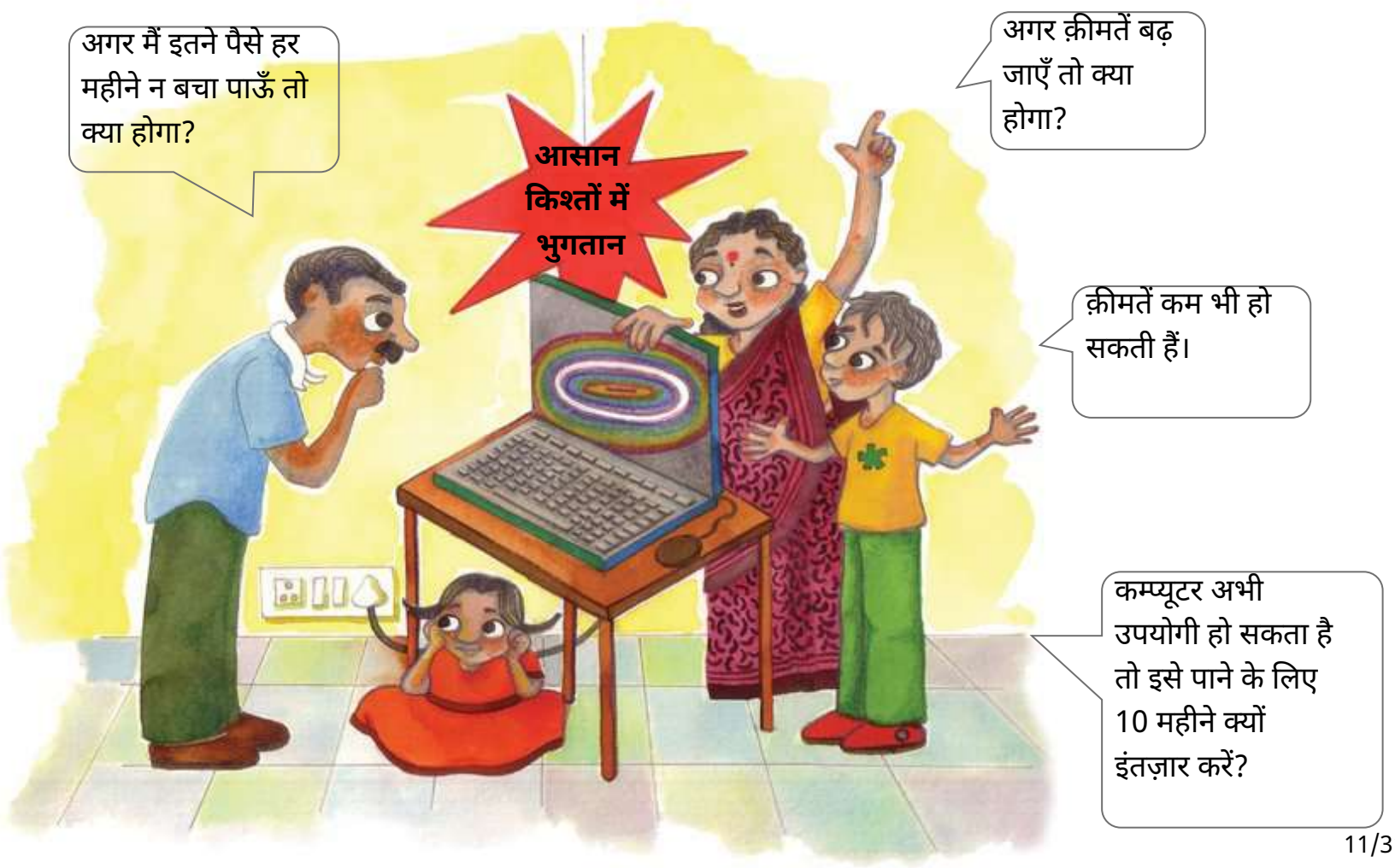

अगर तुम 20,000 रुपए की क़ीमत का कम्प्यूटर ख़रीदना चाहो तो क्या हर महीने 2000 रुपए बचाना बेहतर होगा ताकि 10 महीने बचत करने के बाद तुम कम्प्यूटर ख़रीद सको? या फिर तुम्हें अभी थोड़ी ज़्यादा क़ीमत चुकाते हुए किश्तों पर कम्प्यूटर ख़रीद लेना चाहिए?

अपनी मदद ख़ुद करने वालों की मदद करना

कई देशों में सरकार और अन्य समाज कल्याण संस्थाएँ उन लोगों की मदद करती हैं, जिन्होंने यह साबित कर दिया है कि वे मेहनती हैं लेकिन उन्हें और पैसों की ज़रूरत है। उदाहरण के लिए अगर कोई विद्यार्थी बोर्ड परीक्षा में अच्छा परिणाम लाता है, लेकिन फिर भी उसे पता है कि कॉलेज की अधिक फ़ीस के कारण वह उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकता तो वह छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकता है।

कभी-कभार सरकार उन चीज़ों के आधे दाम का भुगतान कर देती है, जिनका लोगों को इस्तेमाल करना ही पड़ता है, लेकिन वे उन का पूरा दाम नहीं चुका सकते। अगर ग़रीब किसान बहुत अधिक मेहनत करने के बाद भी अपना कर्ज़ चुकाने या खाद ख़रीदने में असमर्थ हों तो सरकार उन्हें कम दाम पर खाद दे देती है। इसे अनुदान कहते हैं। भारत में अक्सर मिट्टी का तेल, खेती के औज़ार, बीज, खाना पकाने की गैस, पानी और स्कूल की कैण्टीन के लिए अनुदान मिलता है।

अनुदान के लिए भुगतान कौन करता है? हम सबसे कर के रूप में जमा किये गए पैसों का इस्तेमाल सरकार अनुदान देने में करती है।

जेब ख़र्च

कुछ परिवार हर महीने अपने बच्चों को कुछ पैसे उनकी अपनी मर्ज़ी से ख़र्च करने के लिए देते हैं। कुछ बच्चे जेब ख़र्च मिलते ही सब पैसे उसी दिन ख़र्च कर देते हैं। जबकि कुछ बच्चे थोड़ा-थोड़ा करके अपने पैसे ख़र्च करते हैं। कुछ बच्चे जेब ख़र्च को जब तक सम्भव हो तब तक बचा कर रखते हैं। त्योहारों और छुट्टियों में बच्चों को अपने रिश्तेदारों से उपहार के रूप में कुछ पैसे मिलते हैं। उस समय जेब भारी हो जाती है! अगर तुम अपने जेब ख़र्च को ठीक से इस्तेमाल करना सीख लो तो बड़े हो जाने पर अपने पैसों को सम्भालना भी सीख सकते हो।

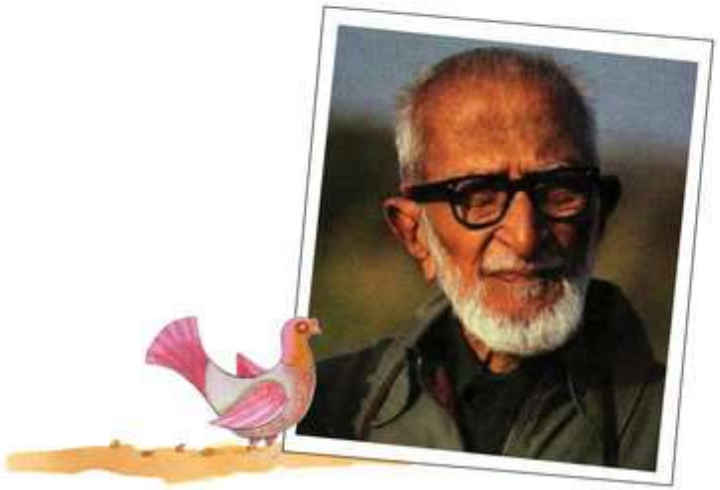

डॉ. सलीम अली जिन्हें प्यार से भारत का पक्षीपुरुष कहा जाता है, अपनी प्रसिद्ध किताब 'फ़ॉल ऑफ़ द स्पैरो' में बताते हैं कि उन्होंने अपनी जेब ख़र्च का क्या किया था। 2 रुपए महीने के अपने जेब ख़र्च से वह क्रॉफ़ोर्ड मार्केट से स्लेटी तीतर या बटेर का जोड़ा या कोई अन्य पंछी ख़रीदा करते थे। बाद में वह दुनिया के महान पक्षी-विशेषज्ञों में से एक बने।

तुम जेब ख़र्च से क्या कर सकते हो?

सुहास गोपीनाथ ने जब एक वेबसाइट शुरू की तब वह केवल 14 साल के थे। कुल 15 साल की उम्र में वह सबसे कम उम्र के बहुराष्ट्रीय इन्फ़ॉर्मेशन टेक्नोलॉजी कम्पनी के मालिक बन गए। उन्होंने इन्टरनेट के बारे में इतना सब कैसे सीखा?

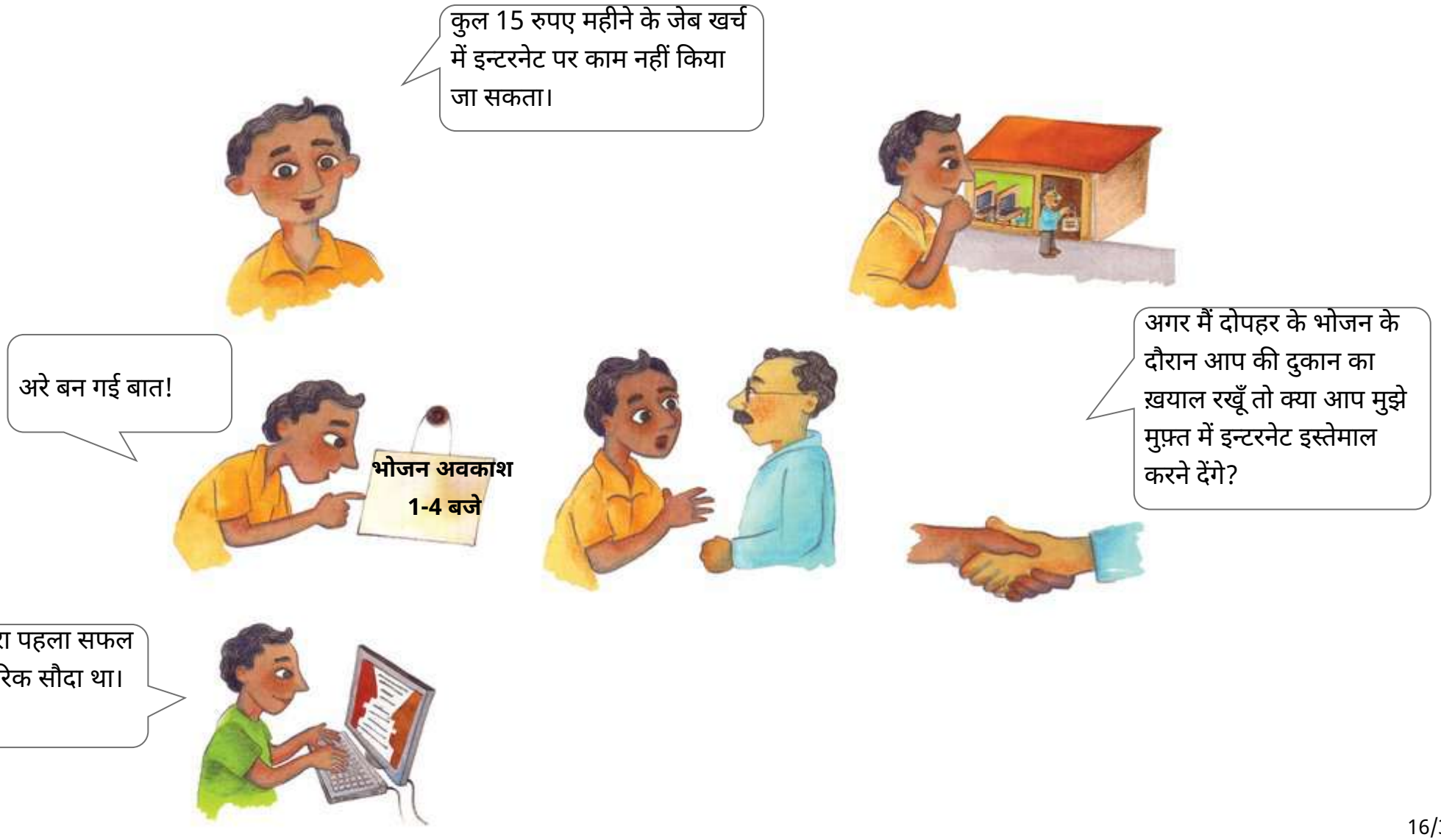

समय बीतता है और पैसे की क़ीमत घटती है!

डॉ. सलीम अली (1896-1987) को जेब ख़र्च के लिए 2 रुपए मिला करते थे, यानी एक साल में 24 रुपए। अगर 1905 में उन्होंने अपने पैसे बचाने का निश्चय किया होता और 24 रुपए बैंक में फ़िक्स्ड डिपॉज़िट के रूप में रखे होते तो वे 1987 तक, जब 91 की उम्र में डॉ. सलीम अली मरे, 14,000 रुपए से ज़्यादा हो जाते। लेकिन अगर वह अपने पैसों को जमा करते रहते तो क्या वे पक्षी विशेषज्ञ बन पाते?

इसे आज़माएँ: मान लो कि तुम 12 साल की उम्र से हर महीने 10 रुपए जमा करने शुरू करो। किसी बैंक अधिकारी से पूछो कि तुम्हारे 18वें जन्मदिन पर तुम्हारे पास कितने पैसे होंगे।

बचत करने का सही समय अभी है। अगर पैसे बस कहीं गड़े हुए हैं तो वे किसी काम के नहीं हैं। पैसों का सही ढंग से इस्तेमाल करना चाहिए, क्योंकि पैसों की क़ीमत हमेशा बदलती रहती है।

टीम चाणक्य मदद को तैयार है

जमा किए पैसों का क्या किया जाए? टीम चाणक्य (यह क्या है? देखें पुस्तक 3 - पैसे के प्रबन्धक) में बैंक, बीमा कम्पनियाँ और कोश-प्रबन्धन कम्पनियाँ शामिल हैं जो पैसों का बेहतर इस्तेमाल करने में हमारी मदद करती हैं। वे व्यापार शुरू करने और सम्भालने में भी हमारी मदद करती हैं। तुम भी एक व्यापारी बन सकते हो!

पिछले साल दादाजी ने हीरा और उसके भाई मोती को परीक्षा में अच्छे अंक लाने पर इनाम के रूप में 20 रुपए दिए थे। हीरा ने कहा, “कितनी गर्मी है! मुझे यक़ीन है कि हमारे सब दोस्त नींबू पानी पीकर खुश होंगे।”

उनकी माँ, जो काम कर के बहुत थक गई थीं, बोलीं, “मैं तो तुम्हारे सब दोस्तों के लिए नींबू पानी नहीं बनाऊँगी!”

हीरा और मोती बाज़ार के लिए निकले। रास्ते में उन्हें जवाहर मिला। जब उन्होंने उसे नींबू पानी की दुकान शुरू करने की अपनी योजना के बारे में बताया तो उसने भी दिलचस्पी ली। वह बोला, “तुम मेरे पैसे भी इस्तेमाल कर लो।” और उसने उन्हें 10 रुपए दिए। वे बाज़ार गए और उन्होंने ख़रीदा:

उन्होंने एक बड़ा बर्तन भर कर नींबू पानी बनाया जिसे उन्होंने 100 कुल्हड़ों में भरा। हीरा ने कुल 50 रुपए में से 20 रुपए चुकाए थे। तो वह जैम जूस स्टाल के 40 शेयरों की मालकिन है। इसी तरह मोती भी 40 शेयरों का मालिक है। जवाहर ने 10 रुपए चुकाए थे इसलिए वह 20 शेयरों का मालिक है। उन्होंने एक बैनर लगाया जिस पर लिखा था: “ताज़ा नींबू पानी सिर्फ़ 1.25 रुपए में”।

नींबू: 20 रुपए
चीनी: 10 रुपए
कुल्हड़: 10 रुपए
बर्फ़: 10
पानीः मुफ़्त

$$\frac{40}{100} = \frac{20}{50}$$

100 गिलास बिके	75 गिलास बिके	100 गिलास बिके	100 गिलास बिके
1.25 रुपए में एक	1.25 रुपए में एक	0.50 रुपए में एक	0.25 रुपए में एक
कमाई = 125 रुपए	कमाई = 93.75 रुपए	कमाई = 50 रुपए	कमाई = 25 रुपए
ख़र्चा = 50 रुपए	ख़र्चा = 50 रुपए	ख़र्चा = 50 रुपए	ख़र्चा = 50 रुपए
मुनाफ़ा = 75 रुपए	मुनाफ़ा = 43.75 रुपए	मुनाफ़ा = 0 रुपए	नुकसान = 25 रुपए
हर गिलास पर मुनाफ़ा रु 0.75	हर गिलास पर मुनाफ़ा रु 0.44	हर गिलास पर मुनाफ़ा रु 0	हर गिलास पर नुकसान रु 0.25
हीरा का मुनाफ़ा 30 रुपए है, ‘मोती का 30 रुपए और जवाहर का 15 रुपए	17.25 रुपए, 17.25 रुपए, 8.50 रुपए	0 रुपए, 0 रुपए, 0 रुपए	हीरा का नुकसान 10 रुपए है, मोती का 10 रुपए और जवाहर का 5 रुपए
बहुत ख़ूब! व्यापार करना सीखें और मुनाफ़ा भी कमाएँ।	कुछ पैसे जेब में और उन्हें 25 गिलास नींबू पानी पीने को मिला!	उन्होंने मुनाफ़ा नहीं कमाया लेकिन भई मज़ा तो आया!	उन्हें बुरा लगा कि उनका पैसा चला गया लेकिन उन्होंने कई लोगों को ख़ुश किया! और उन्होंने बहुत कुछ सीखा।

जब व्यवसायी लोग नई कम्पनियाँ शुरू करते हैं तो वे पैसे निवेश करते हैं। वे दूसरों को भी कम्पनी शुरू करने में निवेश करने के लिए आमन्त्रित करते हैं।

शेयर भी पैसे निवेश करने का एक तरीका है। कम्पनी जनता को अपना हिस्सेदार बनाकर अपने विकास में भाग लेने देती है। कैसे? अपने स्वामित्व को इकाइयों, जिन्हें शेयर कहते हैं, में बाँट कर। मान लो कि एक कम्पनी अपने स्वामित्व को 1000 शेयरों में बाँट लेती है। (याद करो, जैम जूस कम्पनी के 100 शेयर थे। हर शेयर की कीमत 0.50 रुपए थी।)

जब तुम एक शेयर ख़रीदते हो तो तुम कम्पनी के एक टुकड़े के मालिक बन जाते हो।

अक्सर कम्पनी के असली मालिक, जिसे **प्रमोटर** कहते हैं, के पास सबसे ज़्यादा शेयर होते हैं। अगर मैं 10 शेयर ख़रीद लूँ तो मैं एक शेयरधारक हूँ। (इसका मतलब मैं कम्पनी के 10/1000 वें भाग का मालिक हूँ।) जब कम्पनी मुनाफ़ा कमाती है तो शेयरों की क़ीमतें बढ़ जाती हैं। जब कम्पनी को घाटा होता है तो उसके शेयर की क़ीमत कम हो जाती है। वैसे ही जैसे हीरा, मोती और जवाहर ने कम्पनी शुरू करने के लिए पैसे लगाए थे और फिर मुनाफ़ा और घाटा बाँटा था वैसे ही हर वह नागरिक जिसके पास पैसे हों, कम्पनियों के शेयर ख़रीद सकता है। शेयर प्रबन्धक लोगों को उन अच्छी कम्पनियों के बारे में सुझाव देते हैं जो मुनाफ़ा कमा रही होती हैं। पैसों को शेयर ख़रीदने में इस्तेमाल करके हम पैसों को बढ़ने देते हैं, लेकिन याद रहे कि अगर कम्पनी को नुकसान हुआ तो हम अपना पैसा गँवा भी सकते हैं जैसे कि हीरा, मोती और जवाहर ने तब गँवाए, जब उन्होंने नींबू पानी का हर गिलास 0.25 रुपए में बेचा था।

भारतीय उद्योग के पिता- जे. एन. टाटा

यह कहानी उस लड़के की है जो अपने दादाजी और परिवार के दूसरे सदस्यों की तरह एक पुजारी बन सकता था। पुजारी बनने के बजाय जमशेदजी नसेरवानजी टाटा भारत के बहुत सम्मानित उद्योगपति बने और भारतीय उद्योग के पिता कहलाए। उनके सपनों, उनकी ईमानदारी, पैसों के इस्तेमाल करने में उनकी समझदारी, अपने देश और लोगों से उनके प्यार ने कई कम्पनियाँ खोलने में उनकी मदद की जिन्हें आज टाटा समूह की कम्पनियाँ कहा जाता है।

जमशेदजी टाटा 3 मार्च, 1839 को गुजरात के नवसारी नाम के छोटे से कस्बे में पैदा हुए थे। जमशेदजी के पिता नसेरवानजी पारसी पुजारियों के परिवार से पहले व्यापारी थे। उन्होंने मुंबई, जिसे तब बम्बई कहा जाता था, में व्यापार शुरू किया। 14 साल की उम्र में जमशेदजी अपने पिता के पास चले आए। जे. एन. टाटा ने एल्फ़िन्स्टॅन कॉलेज में इतनी अच्छी तरह से पढ़ाई की कि कॉलेज ने उनकी फ़ीस वापस कर दी थी।

29 साल के होने पर उन्होंने अपनी स्वयं की व्यापारिक कम्पनी शुरू की। वे इतना पैसा कमा लेना चाहते थे जिससे देश और उसके नागरिकों की मदद के लिए सामाजिक कार्यक्रम चलाए जा सकें। कम्पनियाँ स्थापति करते हुए उन्होंने कई मुसीबतों का सामना किया, पर फिर भी हमेशा यह सुनिश्चित किया कि कर्मचारियों को काम करने के लिए बढ़िया वातावरण मिले और उनके परिवार आरामदेह घरों में रहें। उनके आसपास बाग़-बाग़ीचे, खेल के मैदान, पूजा करने की जगह, स्कूल और अस्पताल हों।

जे. एन. टाटा द्वारा स्थापित सबसे बढ़िया संस्थाओं में भारत की पहली इस्पात कम्पनी (टाटा स्टील), पहली प्रमुख भारतीय ऊर्जा कम्पनी (टाटा हाइड्रो-इलैक्ट्रिक पावर) और पहला तकनीकी शिक्षा संस्थान (बैंगलूरू स्थित टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ़ साइन्स) शामिल हैं।

उन्होंने अपनी अर्जित सम्पत्ति को होशियार विद्यार्थियों और मेहनती लोगों के कल्याण के लिए इस्तेमाल किया। इस महान भारतीय के नाम पर एक शहर बसा है - जमशेदपुर।

मेरे पैसे कितने सुरक्षित हैं?

टीम चाणक्य में एक महत्त्वपूर्ण खिलाड़ी है बीमा कम्पनी। आओ जानें कि बीमा होता क्या है। हम छतरी लेते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यह हमें धूप और बारिश से बचाएगी। इसी तरह बीमा योजना भी अच्छे और बुरे समय में हमारी सुरक्षा करती है।

बीमा वह सुविधा है जो छोटी लेकिन निश्चित राशि का नियमित भुगतान करने पर हमें बड़े अप्रत्याशित ख़र्चों से बचाती है। निश्चित राशि के नियमित भुगतान को प्रीमियम कहते हैं। और बड़ी अप्रत्याशित घटना को जोख़िम कहते हैं। गाँव में कम्प्यूटर सेण्टर शुरू करने पर व्यक्ति किसी कम्पनी से बीमा पॉलिसी ले सकता है। बीमा पॉलिसी बताती है कि उसे कितने समय तक कितना भुगतान करना चाहिए और दुर्घटना होने पर वह कितनी रक़म का दावा कर सकता है। कम्प्यूटर सेण्टर में चोरी या दुर्घटना होने पर पॉलिसीधारक बीमा कम्पनी को नुकसान के बारे में बता कर ख़ुद को हुए नुकसान के आधार पर धनराशि का दावा करता है और कम्पनी अपने आकलन के आधार पर उसे धन का भुगतान करती है। लेकिन अगर कम्प्यूटर सेण्टर में कभी भी आग न लगे या डकैती न पड़े तो क्या होगा?

प्रीमियम वह क़ीमत है जो हम बीमा कम्पनियों को इसलिए चुकाते हैं ताकि हम अपने जीवन में अप्रत्याशित घटनाओं के डर के बिना अपने व्यापार और बचत का ख़याल रख सकें। यह वह पैसा भी है, जिसका इस्तेमाल बीमा कम्पनियाँ उन दूसरे पॉलिसीधारकों के दावों का भुगतान करने के लिए करती हैं जिन्हें सचमुच नुकसान हुआ है।

बीमा कम्पनी स्वास्थ्य, जीवन, चोरी और प्राकृतिक आपदाओं के जोख़िमों के लिए बीमा करती हैं। किसान अप्रत्याशित मौसम का भी बीमा करवा सकते हैं। कभी-कभार बिना मौसम की बारिश धान, आम और टमाटरों की बढ़िया फसल को ख़राब कर सकती है। ऐसा होने पर पॉलिसीधारक किसानों को बीमा कम्पनियों से अपने नुकसान की भरपाई के लिये पैसे मिल जाते हैं।

लेकिन याद रखें कि अपना बीमा करवा लेने का मतलब यह नहीं है कि अब आप पूरी तरह लापरवाह हो सकते हैं। उदाहरण के लिए अगर श्याम ने दुर्घटना का बीमा करवाया है तो वो बस के आगे-आगे सड़क पर दौड़ नहीं लगा सकता। अगर वह ऐसा करेगा तो बीमा कम्पनी से मुआवज़े की माँग करने से पहले वह ज़ख्मी हो चुका होगा।

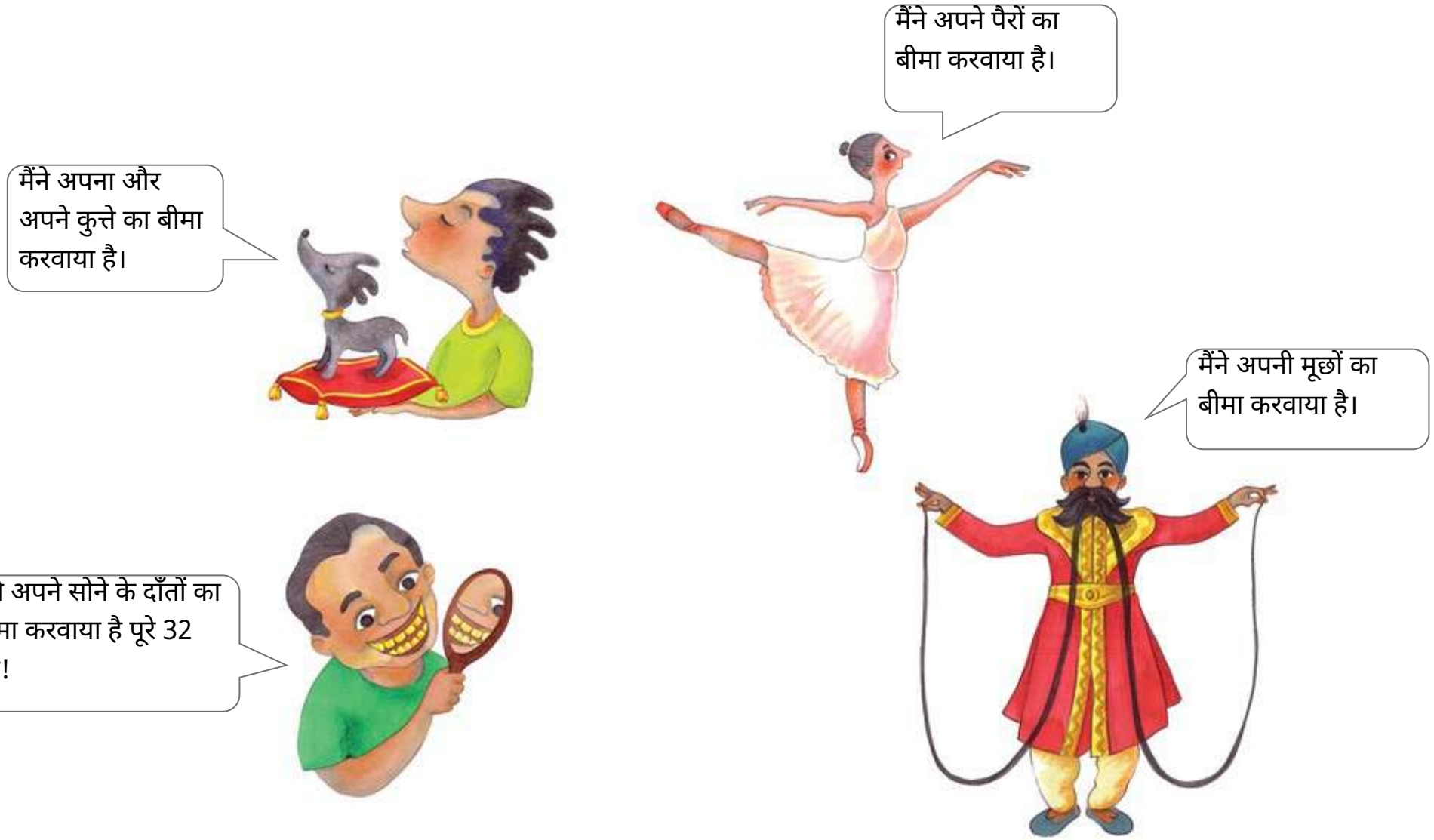

लालची या होशियार?

अगर किसी बच्चे को लड्डू पसन्द हैं और वह खाने के लिए एक लड्डू ख़रीद लेता है तो यह एक आवश्यकता है। अगर वह पाँच लड्डू ख़रीदता है ताकि सारे दिन उन्हें खा सके तो यह लालच है। लेकिन अगर उसकी माँ 50 लड्डू बनाने के लिये आटा, खाना बनाने का तेल और चीनी ख़रीदती हैं और उन लड्डुओं को महीने में अलग-अलग समय पर इस्तेमाल करती हैं तो वह होशियार हैं, लालची नहीं। क्यों?

लालच, मुझे-अभी-सब कुछ-चाहिए वाली भावना है जो किसी के लिए भी अच्छी नहीं है। सावधानी से यह सोचना कि पैसों को बजट की सीमा में कैसे ख़र्च किया जाए, और वर्तमान के ख़र्चों और भविष्य की आवश्यकताओं को बराबर अहमियत देना होशियारी की निशानी है। भविष्य के लिए पैसे, सोना या दूसरी क़ीमती चीज़ें बचाना लालच नहीं, बल्कि जीवन में हो सकने वाली अच्छी और बुरी घटनाओं के लिए तैयारी रखने का एक रास्ता है।

जोख़िम उठाओ, इनाम पाओ

अक्सर हम लोककथाओं में पढ़ते हैं कि एक वीर राजकुमार पहाड़-नदियाँ पार करता है और राज्य जीतने के लिए राक्षस से युद्ध लड़ता है। वह जोख़िम के बारे में जानते हुए भी चुनौती स्वीकार करता है। लेकिन वह साहस भरा कदम उठाता है क्योंकि उसे विश्वास था कि वह राज्य जीत सकता है। व्यापारी लोग निवेश करते हुए अक्सर जोख़िम उठाते हैं। तुम्हारे परिवार ने यह सोचते हुए ज़मीन का एक टुकड़ा ख़रीदा कि कुछ साल बाद जब क़ीमतें बढ़ेंगी तो उसे बेच कर ज़्यादा पैसे मिलेंगे। ज़्यादातर तो ज़मीनों के दाम बढ़ते ही हैं लेकिन कभी-कभी कम भी हो जाते हैं। ऐसे समय में ज़मीन बेचने का परिणाम घाटा होता है। जितना ज़्यादा जोख़िम होगा, उतने ही बेहतर लाभ होने के अवसर होंगे। लेकिन इसका विपरीत भी सही है- जितना ज़्यादा लाभ होगा उतना ही ज़्यादा जोख़िम भी होगा। सभी चीज़ों के बारे में सोच लेने के बाद ही आर्थिक निर्णय लेना बेहतर है।

पैसों के मामले में जोख़िम लेना अवैध नहीं है। लेकिन देश के नियमों का उल्लंघन करके पैसे कमाना अवैध है। अगर कोई दुकानदार किसी उत्पाद के लिफ़ाफ़े पर लिखी रक़म से ज़्यादा क़ीमत माँगता है तो वह अवैध पैसे बना रहा है। अगर अधिकतम ख़ुदरा मूल्य (तुमने बिस्कुट के पैकेट, साबुन की टिक्की और कॉपी पर एम आर पी छपा ज़रूर देखा होगा) 20 रुपए अंकित है तो दुकानदार तुमसे 20 रुपए ही ले सकता है।

डाक घर में 5 रुपए अंकित डाकटिकट 5 रुपए में ही बेचा जा सकता है, 5.25 रुपए में नहीं। अगर बस में कंडक्टर टिकट पर अंकित रक़म से कम पैसे लेकर तुम्हें पहले इस्तेमाल हो चुका टिकट देता है तो वह अवैध पैसा कमा रहा है। तुम्हारे परिवार को जब कोई खुदरा व्यापारी पंखा, प्रेशर कुकर या मोबाइल फोन एम आर पी से कम में देता है लेकिन उसका बिल नहीं देता तो वह अवैध पैसे कमा रहा है।

पैसों का दैनिक विवरण

हर रोज़ या कम से कम हर हफ़्ते यह हिसाब रखो कि तुम्हें क्या मिल रहा है (आमदनी), तुमने क्या ख़र्च किया (भुगतान), तुमने क्या बचाया (क्या वो संपत्ति है?), क्या तुम्हें दूसरों को धन देना पड़ा जिसके वापस पाने की उम्मीद है (उधार) और तुमने क्या सदा के लिए दिया (उपहार); तो तुम्हें अपने पैसे बेहतर तरीके से सम्भालने में मदद मिलेगी। विशेषज्ञों ने पाया है कि जो लोग अपने आर्थिक फ़ैसलों का विवरण डायरी में लिखते हैं, वे भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी कमाई का कुछ हिस्सा रखने की कोशिश करते हैं।

अब जब तुम पैसों के बारे में काफ़ी सारी बातें जान गए हो तो यह भी जान लो: अगर एक परिवार कुछ समय यह सोचने में बिताता है कि कैसे कमाएँ, बचाएँ और निवेश करें तो परिवार सुरक्षित रहेगा।

अगर तुम पैसों के नियम समझने में ज़्यादा समय बिताओगे तो तुम्हारे पास ख़र्च करने के लिए ज़्यादा पैसा हो सकता है!

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: पैसे का समझदारी से इस्तेमाल is translated by Madhubala Joshi . The © for this translation lies with Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Be Wise with Money', by Mala Kumar . © Pratham Books , 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This story has been published on Storyweaver by Pratham Books. www.prathambooks.org

Images Attributions:

Cover page: Friends and revolution, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Domestic needs, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Cow and coins, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Friends in conversation, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Need-Board, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Mother with pets and children, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Balance scales and family, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Juxtaposition of wealth, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Children saving money, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Man and Woman looking up, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 11: Introduction to the Big Bang, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Girl's a champion, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Birds and grains, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Siblings over chocolate, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Salim Ali, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: First job, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Money under the tree, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: People and transactions, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: The lemon water stall, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Rate chart, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: Pile of Coins, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: Jumbo Jigsaw, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 23: Jamsedhji Tata, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 24: Industry growth, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 25: Come rain or sun, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 26: From the myths, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 27: People and their favourites, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 28: Money matters, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 29: Of birds, balloons and people, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 30: A ticket, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 31: Yellow pattern, by Deepa Balsavar © Pratham Books, 2013. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पैसे का समझदारी से इस्तेमाल

(Hindi)

रुपया पैसा श्रृंखला ऐसे कई उपयोगी तथ्य उजागर करती है जो हमारी इस बदलती हुई दुनिया में बच्चों को पैसे के सही उपयोग करने में सहायता करेंगे। केवल पैसे कमाना और बचाना ही काफ़ी नहीं है। हर किसी को पैसे को होशियारी से इस्तेमाल करना चाहिए ताकि हमारी अभी और बाद की ज़रूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त पैसा हो। प्रसिद्ध पक्षी विशेषज्ञ सलीम अली ने अपने जेब ख़र्च से क्या किया था? क्या हर चीज़ की क़ीमत होती है? धूप की क्या कीमत होती है? बीमा क्या है? इस सब के बारे में पैसे का समझदारी से इस्तेमाल, पुस्तक 4 पढ़ कर जानिए। रुपया पैसा श्रृंखला में और भी बहुत कुछ जानने को मिलेगा।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!

This book is shared online by Free Kids Books at https://www.freekidsbooks.org
in terms of the creative commons license provided by the publisher or author.

Want to find more books like this?

https://www.freekidsbooks.org

Simply great free books -

Preschool, early grades, picture books, learning to read,
early chapter books, middle grade, young adult,
Pratham, Book Dash, Mustardseed, Open Equal Free, and many more!

Always Free – Always will be!

Legal Note:

This book is in CREATIVE COMMONS - Awesome!! That means you can share, reuse it, and in some cases republish it, but only in accordance with the terms of the applicable license (not all CCs are equal!), attribution must be provided, and any resulting work must be released in the same manner.

Please reach out and contact us if you want more information: https://www.freekidsbooks.org/about

Image Attribution: Annika Brandow, from You! Yes You! CC-BY-SA.
This page is added for identification.